International Journal of Sanskrit Research 2021; 7(1): 381-382

International Journal of Sanskrit Research

अनन्ता

ISSN: 2394-7519
IJSR 2021; 7(1): 381-382
© 2021 IJSR
www.anantaajournal.com
Received: 19-10-2020
Accepted: 23-12-2020

वेदप्रकाश
शोधच्छात्र, संस्कृत विभाग, पंजाब विश्वविद्यालय, चण्डीगढ़, भारत

Corresponding Author:
वेदप्रकाश
शोधच्छात्र, संस्कृत विभाग, पंजाब विश्वविद्यालय, चण्डीगढ़, भारत

वाल्मीकिरामायण में वर्णित वानर जाति का स्वरूप

वेदप्रकाश

भूमिका

वानर जाति की वाल्मीकिरामायण में महत्वपूर्ण भूमिका है। किष्किन्धा काण्ड से लेकर युद्धकाण्ड तक इस जाति का राम से प्रतिच्छाया के समान संग रहा है। वानरों की सहायता के बिना राम का रावण को युद्ध में पराजित करना असम्भव सा प्रतीत होता है। परन्तु लोक में सामान्य लोग एक कवि की अलंकारिक भाषा व काव्यशैली का ज्ञान न होने से रामायणवर्णित वानरों को वानर (बन्दर) एक पशु विशेष समझ बैठे इसलिए वर्तमान परिस्थितियों में वानर जाति का वास्तविक स्वरूप प्रकट करना अपेक्षित है।

कूट शब्दः वाल्मीकिरामायण, वानर जाति, किष्किन्धा काण्ड

प्रस्तावना

वानर शब्द किसी योनि विशेष या प्राणियों की प्रजाति का बोध नहीं करता। अपितु वने भवं वानम्, राति (रा आदाने) गृह्णाति ददाति वा। वानं वनसम्बन्धिनं फलादिकं गृह्णाति ददाति वा अर्थात जो वन में उत्पन्न होने वाले साधनों पर निर्भर रहता है फलादि का लक्षण करता है वह वानर कहलाता है। यहां जाति से अभिप्राय मनुष्यों का वर्ग विशेष जो कबिलो में रहते हुए वन्य प्रदेशों मे रहते थे व वहीं अपनी शासन व्यवस्था भी चलाते थे। वाल्मीकिरामायण में ही अनेकों प्रसंग प्राप्त होते हैं जिनके आधार पर कहा जा सकता है कि हनुमान् आदि वानर बन्दर नहीं अपितु शक्तिशाली व विद्वान थे।
ऋष्यमूक पर्वत पर जब राम–लक्ष्मण की हनुमान् से प्रथम बार भेंट होती है तो हनुमान् के वचन सुनकर राम लक्ष्मण को कहते हैः–

नानृग्वेदविनीतस्य नायजुर्वेद धारिणः
नसामवेदविदुषः शक्यमेवं विभाषितुम्।।
नूनं व्याकरणं कृत्स्नमनेन बहुधा श्रुतम्।
बहु व्याहरतानेन न किञ्चिदपशब्दितम्।।[1]

अर्थात् जिसको ऋग्वेद, यजुर्वेद व सामवेद का पूर्ण ज्ञान नहीं है वह इस प्रकार की सुन्दर भाषा में वार्तालाप नहीं कर सकता। निश्चय से ही इसने सम्पूर्ण व्याकरण का अनेक बार स्वाध्याय किया क्योंकि इतनी अधिक बातें बोलकर भी इनके वाणी से एक बार भी अशुद्धि नहीं हुई।
हनुमान् भाषाविद् थे जो अवसर के अनुकूल व्यवहार में प्रयोग करते थे। सुन्दरकाण्ड में अशोकवाटिका में सीता को देखकर चिन्ता करते हैं कि यदि वे द्विज के समान शुद्ध संस्कृत भाषा का प्रयोग करेंगे तो सीता उनको रावण समझकर भयभीत हो जायेगी इसलिए वे सामान्य मनुष्यों की भाषा का प्रयोग करेंगे। [2]
रामायण काल में हनुमान् की तुलना में बल, बुद्धि और गति से युक्त अन्य कोई नहीं था। हनुमान् सुमेरु पर्वत पर राज्य करने वाले केसरी व अञ्जना के पुत्र थे तथा ऋषियों व देवताओं से अनेक आर्शीवाद प्राप्त कर चुके थे। इतने बड़े वीर व विद्वान् पुरूष को पशुयोनि मे मानना असंगत है। भवभूतिकृत उत्तररामचरितम् में भी राम सीता को हनुमान का चित्र दर्शाते हुए उन्हें आर्य कहते हैं।[3] उस समय आर्य शब्द सुसंस्कृत श्रेष्ठ मनुष्यों के लिए प्रयोग किया जाता था।
सुग्रीव जब सीता की खोज में पृथ्वी पर चारों दिशाओं में वानरों को भेजते हैं तब सुग्रीव ने भूमण्डल के अनेक भागों का वर्णन जिस प्रकार किया है उससे ज्ञात होता है कि रामायण काल में सुग्रीव से बड़ा कोई भूगोल का ज्ञाता नहीं था।[4]

बल व बुद्धि के विषय में सुग्रीव के अग्रज वालि की भी तुलना दुर्लभ है। रावण जब अपने बल को प्रदर्शित करने के लिए वालि से युद्ध करने आया तो वानरों ने कहा –

एतानस्थिचयान् पश्य एतेशंखपाण्डुराः।
युद्धार्थिनामिमे राजन् वानराधिपतेजसा।।[5]

अर्थात हे राजन! यें जो शंख के समान सफेद हड्डियों के ढेर हैं ये वानरराज वालि से युद्ध करने आये इच्छुकों के हैं जो वालि के द्वारा नष्ट कर दिये गये हैं। इसके पश्चात् वालि ने रावण को बुरी तरह से पराजित किया और अपनी काँख से दबोचकर चारों सागरों के तट पर सन्ध्यावंदन किया। फलस्वरूप रावण ने पराजय स्वीकार करी व वालि का अभिन्न मित्र बन गया।[6]
वालि के पुत्र अंगद के विषय में भी बताया गया है :–

बुद्ध्या ह्यष्टांगया युक्तं चतुर्बलसमन्वितम्।
चतुर्दश गुणमेने हनुमान् वालिनः सुतम्।।[7]

अर्थात् हनुमान् वालिपुत्र अंगद को जानते थे कि वे आठ प्रकार की बुद्धि, चार प्रकार के बल व चौदह गुणों से सम्पन्न है।
इसी प्रकार नल नामक वानर विश्वकर्मा के पुत्र थे व उस समय के महान् शिल्पकार थे। वानर सेना को लंका ले जाने हेतु इन्होंने सौ योजन लम्बे सेतु का निर्माण किया था।[8]
इसलिए इतने बड़े भूगोल के ज्ञाता, बल से सम्पन्न, अनेक गुणों को धारण करने वाले व महान् शिल्पकार अवश्य ही मनुष्य थे वानर केवल उनके वर्ग विशेष की संज्ञा थी।
वर्तमान काल में भी विशेषकर हरियाणा के हिसार जिले के बास गाँव में कुछ वर्ग विशेष के लोगों का गोत्र मोर है। मोर भारत देश का राष्ट्रीय पक्षी है। कुछ समय पश्चात् यदि बास गाँव के लोगों को पक्षी मानने लगे तो यह अत्यन्त असंगत व उपहास योग्य होगा। उसी प्रकार वाल्मीकिरामयण में वर्णित वानरों को वर्तमान में बन्दर के रूप में चित्रित करना भी असंगत है।
यदि यह तर्क दिया जाये कि सुन्दरकाण्ड में हनुमान की पूँछ में आग लगाई गई इसलिए शरीर में पूँछ होने के कारण वे पशु थे तो यह तर्क अत्यन्त असंगत है क्योंकि प्राणिदेह के अवयवों की नियत रचना उनको अमुक जाति का घोषित करती है परन्तु रामायण के वानरों के विषय में द्रष्टव्य है कि सुग्रीव आदि की स्त्रियों का वर्णन सामान्य नारियों के समान है। उनके शरीर पर किसी पूँछ या वानरमुख आदि का वर्णन नहीं है। न ही चलचित्रों में वानरस्त्रियों के शरीर पर पूँछ आदि दिखाई देती है। इस प्रकार का नर मादा का भेद अन्य किसी वर्ग में देखने मे नहीं आता। वालि की पत्नी तारा वैद्य सुषेण की पुत्री थी व अनेक प्रकार के उत्पातों को समझने में निपुण व सुपरामर्श देने वाली थी।

सुषेण दुहिता चेयमर्थसूक्ष्मविनिश्चये।[9]
औत्पातिके च विविधे सर्वतः परिनिष्ठिता।।
यदेषा साध्विति ब्रूयात् कार्य तन्मुक्तसशयम्।
न हि तारामतं किञ्चिदन्यथा परिवर्तते।।[9]

अतः इतनी गुणवती स्त्री को कोई पिता किसी पशु को प्रदान नहीं करेगा। वाल्मीकिरामायण में वानरों की पूंछ पर दूसरा तर्क यह दिया जा सकता है कि जिस प्रकार वर्तमान युग में भी संसार में विभिन्न भौगोलिक क्षेत्रों में मनुष्य विभिन्न प्रकार के वस्त्र व उनके अनेक प्रकार के चिह्न भी धारण करते हैं। भारत में ही विभिन्न क्षेत्रों में मनुष्य सिर पर भिन्न–भिन्न व अद्भुत पगड़ियाँ अथवा टोपियाँ पहनते हैं तो हो सकता है इसी प्रकार वाल्मीकिरामायण में वर्णित वानरों मे एक पूँछ का चिह्न अपने शरीर पर धारण करते हों जिससे उनके वर्ग विशेष का पता चलता है। अतः केवल पूँछ के आधार पर हनुमानादि को बन्दर नहीं माना जा सकता।

उपसंहार :–

काव्य और इतिहास में एक अंतर यह भी होता है कि इतिहास तो सामान्य सूचनायें प्रदान करता है परन्तु वही इतिहास जब काव्यात्मक ढंग से लिखा जाता है तो कवि उसको एक विशिष्ट शैली में वर्णित करता है। जिस कारण विज्ञान के कुछ सामान्य नियमों का अतिक्रमण हो जाता है परन्तु कुछ पाठक कवि के उस वर्णन को अभिधार्थ में धारण कर लेते हैं जिस कारण अमुक विषय कई बार उपहास का पात्र बन जाता है।
यही स्थिति वाल्मीकिरामायण में वानरों के संदर्भ में भी है। वाल्मीकि आदि कवि थे उन्होंने रामकथा का इतिहास काव्य के रूप में लिखा। काव्य में सामान्य इतिहास की पुस्तकों की तरह प्रत्येक बात विस्तार से नहीं समझाई जाती इसलिए सहृदय पाठकों व शोधकर्ताओं को समाज के सम्मुख वास्तविकता प्रकट करनी होती है।
उपर्युक्त वर्णन के आधार पर यह सिद्ध किया जा सकता है कि हनुमानादि अनके गुणों से सम्पन्न मनुष्य थे जिनके कबीले अथवा वर्ग का नाम वानर था।

सन्दर्भ

1. वाल्मीकिरामायण, किष्किन्धाकाण्ड – 3.28–29
2. वही, सुन्दरकाण्ड – 30.18–19
3. उत्तररामाचरितम्, प्रथम अंक, पृष्ठ – 195
4. वाल्मीकिरामायण, किष्किन्धाकाण्डा – सर्ग – 40–43
5. वही, उत्तरकाण्ड – 33.7
6. वही – 33.14–46
7. वही, किष्किन्धाकाण्ड – 54.2
8. वही, युद्ध – 22.43–74
9. वही, किष्किन्धाकाण्ड – 22.13–14